DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE
D.B. COLLEGE, JAYNAGAR

BY:DR. ANANTESHWAR KUMAR YADAV
(ASSIST. PROFESSOR, GPTT)
Mob- 9415376545

B.A PART-II Paper-IV (Indian Government and Politics)

LALIT NARAYAN MITHILA UNIVERSITY, DARBHANGA-846004(BIHAR)

Ref. No.................. Lecture No. 20 & 21 Date 21/08/20

राजनीतिक दल
(Political Parties)

वर्तमान समय में शासन के विविध रूपों में प्रजातंत्र सर्वाधिक लोकप्रिय है। और प्रजातंत्रीय शासन के दो प्रकार होते हैं-

(1) प्रत्यक्ष प्रजातंत्र और
(2) अप्रत्यक्ष या प्रतिनिधियात्मक प्रजातंत्र।

राज्यों की वृहद जनसंख्या और क्षेत्र की विशालता के कारण वर्तमान समय में विश्व के लगभग सभी राज्यों में प्रतिनिधियात्मक प्रजातंत्रीय शासन ही प्रचलित है। इस शासन व्यवस्था के अन्तर्गत जनता अपने प्रतिनिधियों को चुनती है। और इन प्रतिनिधियों के द्वारा शासन किया जाता है। जनता द्वारा अपने-अपने प्रतिनिधियों के निर्वाचन और प्रतिनिधियों द्वारा शासन के संचालन की इस सम्पूर्ण प्रक्रिया को पूर्ण करने के लिए राजनीतिक दलों का अस्तित्व अनिवार्य है। इसके अतिरिक्त प्रजातंत्रात्मक शासन व्यवस्था लोकमत पर आधारित होती है और राजनीतिक दल लोकमत के निर्माण और उसकी अभिव्यक्ति के सर्वाधिक महत्वपूर्ण साधन होते हैं।

प्रजातंत्रीय शासन के अन्तर्गत केवल शासक दल का ही नहीं वरन् विरोधी दल का भी महत्व होता है। विरोधी दल शासन करने वाले राजनीतिक दल को मर्यादित तथा नियंत्रित रखने का कार्य करता है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि आधुनिक राजनीतिक जीवन के लिए दलीय संगठनों का बड़ा महत्व है और इसके बिना लोकतंत्र की सफलता संभव ही नहीं है। विचारक बर्क के शब्दों में कहा जा सकता है कि "दलीय प्रणाली चाहे पूर्ण रूप से भले के लिए हो या बुरे के लिए हो प्रजातंत्रात्मक शासन-व्यवस्था के लिए अपरिहार्य है।"

 PTO

Scanned with CamScanner

राजनीतिक दल की परिभाषाएँ

एडमंड बर्क के अनुसार "राजनीतिक दल ऐसे लोगों का एक समूह होता है, जो किसी ऐसे सिद्धान्त के आधार पर जिस पर वे एकमत हों, अपने सामूहिक प्रयत्नों द्वारा जनता के हित में काम करने के लिए एकता में बंधे होते हैं।"

गेटल के मतानुसार "राजनीतिक दल न्यूनाधिक संगठित उन नागरिकों का समूह होता है जो राजनीतिक इकाई के रूप में कार्य करते हैं और जिनका उद्देश्य अपने मतदान बल के प्रयोग द्वारा सरकार का नियंत्रण करना व अपनी सामान्य नीतियों को क्रियान्वित करना होता है।"

गिलक्राइस्ट के शब्दों में "राजनीतिक दल की परिभाषा उन नागरिकों के संगठित समूह के रूप में की जा सकती है जो राजनीतिक रूप से एक विचार के हैं और जो एक राजनीतिक इकाई के रूप में कार्य कर सरकार पर नियंत्रण करना चाहते हों।"

मैकाइवर ने कहा है कि "राजनीतिक दल एक ऐसा समुदाय है जो किसी ऐसे सिद्धान्त अथवा ऐसी नीति के समर्थन के लिए संगठित हुआ हो जिसे वह वैधानिक साधनों से सरकार का आधार बनाना चाहता हो।"

राजनीतिक दल के आवश्यक तत्व

एडमण्ड बर्क, गेटल गिलक्राइस्ट आदि विद्वानों द्वारा राजनीतिक दल की जो परिभाषाएँ बताई गई हैं, उनके आधार पर उन दलों के निम्नलिखित आवश्यक तत्व बताए जा सकते हैं —

(1) संगठन – राजनीतिक दल का प्रथम आवश्यक तत्व यह है कि वे संगठित होने चाहिए। आधारभूत समस्याओं के सम्बन्ध में एक ही प्रकार का विचार रखने वाले व्यक्ति जबतक संगठित न हों उस समय तक उन्हें राजनीतिक दल नहीं कहा जा सकता। राजनीतिक दलों की शक्ति

DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE
D.B. COLLEGE, JAYNAGAR

BY:DR. ANANTESHWAR KUMAR YADAV
(ASSIST. PROFESSOR, GPTT)
Mob- 9415376545

B.A PART-II Paper-IV (Indian Government and Politics)

LALIT NARAYAN MITHILA UNIVERSITY, DARBHANGA-846004(BIHAR)

Ref. No................. Date. 21/08/20

उनके संगठन पर निर्भर करती है और संगठन के आधार पर ही उनके द्वारा शासन-शक्ति प्राप्त कर अपनी नीति को कार्यरूप में परिणत ~~किया~~ करने का प्रयत्न किया जा सकता है।

(2) सामान्य सिद्धान्तों की एकता — राजनीतिक दल का संगठित रूप से कार्य करना उसी समय संभव है जबकि राजनीतिक दल के सदस्य किन्हीं सामान्य सिद्धान्तों के सम्बन्ध में एक ही प्रकार का विचार रखते हों।

(3) संवैधानिक साधनों में विश्वास — राजनीतिक दल के लिए यह आवश्यक है कि वह अपनी नीति या विचारों को कार्य रूप में परिणत करने के लिए संवैधानिक मार्ग का अनुसरण करे। मतदान और मतदान के निर्णय में उनका आवश्यक रूप से विश्वास होना चाहिए। गुप्त उपाय या सशस्त्र क्रांति जैसे असंवैधानिक साधनों में विश्वास रखने वाले संगठनों को राजनीतिक दल नहीं कहा जा सकता। जैसे- नाजी दल या फॉसी दल, विशुद्ध राजनीतिक दल न होकर विशुद्ध क्रांतिकारी सैनिक संगठन थे।

(4) शासन पर प्रभुत्व की इच्छा — राजनीतिक दल का एक तत्व यह होता है कि उनका उद्देश्य शासन पर प्रभुत्व स्थापित कर अपने विचारों और नीतियों को कार्यरूप में परिणत करना होता है यदि कोई संगठन शासन के बाहर रहकर कार्य करना चाहता है तो इसे राजनीतिक दल नहीं कहा जा सकता।

(5) राष्ट्रीय हित — राजनीतिक दल के लिए आवश्यक है कि उनके द्वारा किसी विशेष जाति, धर्म या वर्ग के हित को दृष्टि में रखकर नहीं वरन संपूर्ण राज्य के हित को ध्यान में रखकर कार्य किया जाना चाहिए।

(समाप्त) Page-No.03

Scanned with CamScanner